श्रीगणेश,
नवारम्भों के देव

गरिमा बोरवणकर द्वारा लिखित

श्री गणेशाय नमः, वह आवाहन है जिसका गायन या श्रवण, सनातन धर्म का अनुसरण करने वाले सभी लोग नए दिन के प्रातःकाल में करते हैं और वे लोग भी करते हैं जो भगवान श्रीगणेश के आशीर्वादों की महिमा को समझते हैं; सनातन धर्म वह शाश्वत व सार्वभौमिक धर्म है जो व्यक्ति की अस्थायी धारणाओं के परे है और जब इसका अनुसरण किया जाता है तो यह मोक्ष तक ले जाता है। नए व्यापार के आरम्भ के समय, जन्मदिवस, वर्षगाँठ, नए घर में प्रवेश अथवा विवाह जैसे महत्त्वपूर्ण अवसरों के शुभारम्भ पर या फिर काम पर निकलते समय या यात्रा के आरम्भ के समय भगवान श्रीगणेश की ही मंगलमय उपस्थिति का आवाहन किया जाता है। भगवान श्रीगणेश से आशीर्वादों के लिए विनयपूर्वक प्रार्थना करना यह सुनिश्चित करता है कि वह दिन, वह अवसर, वह अनुष्ठान सकारात्मक ऊर्जा से पूरित होगा, निर्विघ्न होगा व उसका समापन सुचारु व सफल रूप से होगा।

भगवान शिव व देवी पार्वती के गजमुख पुत्र, भगवान श्रीगणेश वे देवता हैं जो हिन्दू धर्म व भारतीय संस्कृति में व्यापक रूप से पूजित हैं। और इतना ही नहीं है। भगवान श्रीगणेश के बारे में कुछ ख़ास है जो उन लोगों को भी मोहित कर देता है जो आम तौर पर उनकी पूजा-अर्चना नहीं करते हैं। सभी संस्कृतियों के लोगों के पास भगवान श्रीगणेश की मूर्तियाँ होती हैं जो उनके घरों, उनके व्यापार, उनके कार्यस्थलों और यहाँ तक की उनकी गाड़ियों में शोभायमान होती हैं। इस प्रकार, भगवान श्रीगणेश धार्मिक व आध्यात्मिक परम्पराओं की समस्त सीमाओं के परे हैं।

भगवान श्रीगणेश का जन्म

भगवान श्रीगणेश के जन्म की व उन्हें अपना गजमुख कैसे प्राप्त हुआ, इसकी कथा अत्यन्त रोचक है :

> एक दिन देवी पार्वती अपने निवास-स्थान में अकेली थीं और स्नान करने जाना चाहती थीं। उन्हें लगा कि जब वे स्नान के लिए जाएँ तो द्वार की रखवाली के लिए कोई होना चाहिए। उनके मन में एक अपूर्व विचार आया! उन्होंने चन्दन-चमेली का तेल मिलाकर जो उबटन अपने शरीर पर लगाया था, उसका कुछ भाग छुड़ाया। उस उबटन को मिट्टी की तरह गूँधकर उसे एक सुन्दर-से बालक का आकार प्रदान किया। फिर अपने श्वास से उसमें प्राण फूँककर उसे जीवन्त कर

दिया। उसे अपना पुत्र घोषित कर, उन्होंने बालक को द्वार की रखवाली करने का आदेश दिया और कहा कि वह *किसी को भी* अन्दर न आने दे।

जब वह बालक द्वार पर खड़ा रखवाली कर रहा था, उस समय भगवान शिव, देवी पार्वती को ढूँढ़ते हुए वहाँ आए। देवी पार्वती जहाँ थीं, उस कक्ष में जाने के लिए वे द्वार की ओर बढ़े। द्वार पर रखवाली कर रहे बालक ने उन्हें अन्दर प्रवेश करने से रोका। भगवान शिव ने सोचा, "शायद यह बालक मुझे जानता नहीं है," इसलिए उन्होंने उसे समझाया कि वे पार्वती जी के पति हैं। पर तब भी उस बालक ने उन्हें अन्दर नहीं जाने दिया। "मेरी माँ ने मुझसे *किसी को भी* अन्दर न आने देने का आदेश दिया है और मैं उनकी आज्ञा का पालन कर रहा हूँ।" इस दन्तकथा के अनुसार इसके उपरान्त उन दोनों के बीच जो युद्ध हुआ, उसमें भगवान शिव ने अपने त्रिशूल से उस बालक का सिर काट दिया।

शोरगुल सुनकर देवी पार्वती ने द्वार खोला। बालक को पृथ्वी पर निष्प्राण पड़ा देखकर उन्होंने भगवान शिव को बताया कि वह उन दोनों का ही पुत्र है। उन्होंने शिव जी से बालक को पुनः जीवित करने के लिए कहा।

भगवान शिव ने, सदैव अपनी सेवा में रहने वाले गणों से कहा कि वे जाएँ और उन्हें जो भी प्राणी सबसे पहले दिखाई दे, उसका सिर वे जल्दी-से लाकर दें। शिवगण शीघ्र ही एक हाथी का सिर लेकर लौटे। इस प्राणी के श्रेष्ठ गुणों को जानकर भगवान शिव ने धीरे-से हाथी के सिर को अपने पुत्र की गर्दन पर रखा और बालक ने तत्क्षण ही अपनी आँखें खोल दीं। अपने पुत्र को प्यार-से गले लगाते हुए भगवान शिव ने बालक को अपने गणों का नायक घोषित किया और उसे 'गणपति' या 'गणेश' नाम प्रदान किया।

गणेश जी को अनेकानेक आशीर्वाद देते हुए भगवान शिव ने घोषणा की कि उनका पुत्र, गणेश जगत में सर्वाधिक बुद्धिमान तथा विद्वान देवता के रूप में प्रसिद्ध होगा। वह मंगलमूर्ति के व सर्वविघ्नहर्ता के मूर्तिमन्त रूप में पूज्य होगा। भगवान शिव ने घोषित किया कि संसार में जब भी देवताओं या मनुष्यों द्वारा कोई महत्त्वपूर्ण कार्य किया जाएगा, उनका पुत्र, गणपति 'अग्रपूज्य' होगा अर्थात् सर्वप्रथम उसकी पूजा होगी।

भगवान श्रीगणेश का रूप

जैसा कि समस्त पौराणिक कथाओं के बारे में सच है, इस कहानी में जो अर्थ समाया हुआ है वह उससे कहीं विस्तृत है जो इसे सुनकर शुरू में समझ में आता है। भगवान का शुभ संकल्प उनके प्रत्येक शब्द व कृत्य में व्याप्त होता है, अतः हम इस बात के लिए आश्वस्त रह सकते हैं कि यह संयोगवश ही नहीं हुआ कि भगवान शिव ने अपने पुत्र को एक हाथी का सिर प्रदान किया। भगवान शिव ने अपने पुत्र को हाथी का सिर यह जानते हुए लगाया कि भगवान श्रीगणेश उन विशिष्ट गुणों के अवतार होंगे जो एक बलशाली हाथी में होते हैं और वे उन गुणों का उपयोग इस जगत के समस्त निवासियों के कल्याण के लिए करेंगे।

अतः, भगवान श्रीगणेश की शारीरिक विशेषताओं व गुणों में गहन प्रतीकात्मक अर्थ निहित है :

- सिर : हाथी अपनी बुद्धिमत्ता व उत्कृष्ट स्मृति के लिए प्रसिद्ध है। हाथी का सिर लगाकर भगवान शिव ने अपने पुत्र को "ज्ञान" यानी समझ व विवेकबुद्धि का वरदान दिया और साथ ही असाधारण स्मरणशक्ति का भी।
- बड़े कान : हाथी जैसे कानों से गणेश जी के पास अपने बहुसंख्य भक्तों की प्रार्थनाएँ सुनने की सूक्ष्म क्षमता होती है।
- छोटे नेत्र : हाथी के छोटे-छोटे नेत्रों से युक्त भगवान श्रीगणेश के पास गहन केन्द्रण व अत्यधिक एकाग्रता है।
- लम्बी सूँड़ : हाथी की सूँड़ मज़बूत, लचीली व किसी भी दिशा में हिलने-डुलने में सक्षम होती है। भगवान श्रीगणेश के लिए यह लम्बी, फुर्तीली सूँड़ ॐ का आकार ग्रहण कर सकती है, जैसा कि भारत में उनकी अनेक छवियों तथा मूर्तियों में दिखता है। वे ॐकारस्वरूप कहलाते हैं। वे इस परममंगल आदि नाद के मूर्तिमान रूप हैं।
- विघ्नहरण की क्षमता : हाथी अपने मार्ग में आने वाली समस्त बाधाओं, जैसे कि टहनियों, पत्तों, पत्थरों व गिरे हुए पेड़ों के तनों को हटा देता है और अन्य पशुओं के लिए घने जंगलों में आसानी से विचरण करने हेतु रास्ता बना देता है। इसी प्रकार, भगवान श्रीगणेश अपने भक्तों व समस्त साधकों के मार्ग में आने वाली विघ्न-बाधाओं को हर लेने की सामर्थ्य से सम्पन्न हैं, ताकि वे साधक अपने साधना-लक्ष्य को पा सकें।

भगवान श्रीगणेश को अकसर चतुर्भुज रूप में दर्शाया जाता है, और अपने हर हाथ में वे ऐसी वस्तु धारण किए हुए हैं जो आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के लिए अत्यन्त महत्त्व रखती है। कुछ वस्तुओं के अनेक अर्थ हो सकते हैं। कभी-कभी ऐसा हो सकता है कि भगवान श्रीगणेश को अपने प्रत्येक हाथ में एक से अधिक वस्तुओं को धारण किया हुआ दर्शाया जाए। सामान्यतः, भिन्न-भिन्न छवियों में उन्हें भिन्न-भिन्न वस्तुओं को धारण किए हुए दर्शाया जाता है, तथापि, भगवान श्रीगणेश को आम तौर पर इस रूप में दर्शाया जाता है :

- उनका सामने वाला दाहिना हाथ 'अभयमुद्रा' में उठा है; यह मुद्रा भक्तों को आशीर्वाद प्रदान करती है और उनके भय का नाश करती है। यह मुद्रा संरक्षण और आश्रय प्रदान करने का भी प्रतीक है।
- उनके सामने वाले बाएँ हाथ में उनका सबसे प्रिय मिष्टान्न 'मोदक' है। मोदक, साधना के परमोच्च फल की अमृतमय मिठास का प्रतीक है और यह फल है, भगवान के साथ ऐक्य की स्थिति।
- उनके पीछे वाले दाहिने हाथ में 'परशु' है, जिससे वे विघ्नों को काटकर दूर करते हैं। एक साधक के लिए परशु का अर्थ है, उसे काटना या दूर करना जो उसकी साधना में अनावश्यक है।
- उनके पीछे वाले बाएँ हाथ में 'पाश' है जिसका उपयोग उन सभी सांसारिक कामनाओं व भ्रान्तियों को फाँसकर उन्हें नष्ट करने के लिए किया जाता है जो साधक की आध्यात्मिक यात्रा में बाधा बनी हों। कभी-कभी उन्हें अपने इस हाथ में कमल धारण किए हुए भी देखा जाता है और यह भी साधना के लक्ष्य की प्राप्ति का ही द्योतक है।
- भगवान श्रीगणेश को अपने एक हाथ में 'अंकुश' [धातु या लकड़ी की लम्बी-सी छड़ी जिसका एक किनारा मुड़ा हुआ होता है] धारण किए हुए भी देखा जा सकता है। 'अंकुश' लोगों को धर्ममार्ग पर बनाए रखता है और साधकों को साधना-पथ पर मार्गदर्शित करता है। 'अंकुश' साधकों को यह भी स्मरण कराता है कि उन्हें अपनी बाह्य विषयों की ओर प्रवृत्तिशील इन्द्रियों की लगाम को थामे रखना है व इन्द्रियों को अन्तर की ओर मोड़ना है।

भारतीय शास्त्रों में सभी देवी-देवताओं को उनके 'वाहन' के साथ दर्शाया जाता है; 'वाहन' का शाब्दिक अर्थ है, 'वह जो वहन करता है या उठाता है,' और देवी-देवता अपने वाहन के माध्यम से लोक-लोकान्तरों में गमन करते हैं। आम तौर पर, यह वाहन कोई पशु या पक्षी होता है। किसी भी देवी-देवता का वाहन उन गुणों या प्रवृत्तियों का प्रतीक होता है जिनका विकास साधक को करना

चाहिए या जिन पर विजय पाना उसके लिए महत्त्वपूर्ण है। भगवान श्रीगणेश का वाहन है 'मूषक,' और उसे भगवान के चरणों के पास विराजमान दर्शाया जाता है। वाहन के रूप में मूषक का होना कई रूपों में महत्त्वपूर्ण है।

मूषक [चूहा] मन का प्रतीक है जो स्वभावतः ही चंचल होता है। परन्तु भगवान की कृपा से जब मन भगवान की ओर उन्मुख होता है, जब वह भगवान के चरणों में लीन होता है तब वह उन पर एकाग्र हो जाता है और उनकी सेवा में रत हो जाता है। तब एक मूषक की ही भाँति, मन अपने मार्ग में आने वाली किसी भी बाधा को काटकर दूर कर सकता है।

भगवान श्रीगणेश का वाहन होने के नाते, मूषक इस दृष्टिकोण का भी प्रतीक है कि इस ब्रह्माण्ड में कुछ भी, यहाँ तक की मूषक जैसा नन्हा-सा जीव भी, किसी अन्य वस्तु की तुलना में नगण्य या तुच्छ नहीं है—हरेक चीज़ का अपना महत्त्व, अपनी उपयोगिता है।

भगवान श्रीगणेश हर आयुवर्ग के लोगों के प्रिय हैं। उनका बड़ा गोलाकार पेट [ऐसी मान्यता है कि इसमें समस्त ब्रह्माण्ड समाया है और यह इस बात को भी दर्शाता है कि भगवान को मोदक कितने प्रिय हैं], उनका गजानन स्वरूप और मूषक के रूप में उनका वाहन; उनके ज्योतिर्मय आनन्दपूर्ण नेत्र और उनकी नटखट लीलाएँ जिनका वर्णन उनकी कई कथाओं में मिलता है—यह सब कुछ लोगों के मन को मोह लेता है। भारत के महाराष्ट्र राज्य में प्रेम से उन्हें 'बाप्पा' कहकर सम्बोधित किया जाता है जिसका अर्थ है, 'भगवान' या 'ईश्वर'।

'श्रीगणेशपञ्चरत्नम्' के प्रथम श्लोक में महान ऋषि आदि शंकराचार्य भगवान श्रीगणेश के मनोरम रूप का स्तुतिगान इस प्रकार करते हैं :

मुदा करात्तमोदकं सदा विमुक्तिसाधकं
कलाधरावतंसकं विलासिलोकरक्षकम्।
अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकं
नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम्॥ १॥

भगवान विनायक को नमन,
जो अपने हाथ में मधुर मोदकरूपी दिव्य परमानन्द को धारण करते हैं,
जो मोक्षप्राप्ति के पथ को प्रकाशित करते हैं,
जो चन्द्रमा की कलाओं से सुशोभित हैं,

और जो संसार के समस्त प्राणियों की रक्षा करते हैं।

भगवान विनायक को नमन,
जो मार्ग से भटके सभी लोगों के पथ-प्रदर्शक हैं,
जो समस्त आन्तरिक और बाह्य नकारात्मक व अशुभ शक्तियों का नाश कर
सभी की रक्षा करते हैं,
जो समस्त अमंगल को हर लेते हैं।[१]

भगवान श्रीगणेश की पूजा-अर्चना

भारत में आज भी, किसी धार्मिक अनुष्ठान से पूर्व, किसी के जीवन के महत्त्वपूर्ण व मांगलिक कार्य से पूर्व, किसी भी नए छोटे या बड़े उद्यम का आरम्भ करने से पूर्व और अधिकतर सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों से पहले भगवान श्रीगणेश का स्मरण और भगवान श्रीगणेश की पूजा की जाती है। भगवान श्रीगणेश नवीन आरम्भों के देवता हैं।

अपने प्रज्ञान व बुद्धिमत्ता के लिए पूजनीय, भगवान श्रीगणेश का वन्दन कला व अक्षरों के संरक्षक के रूप में भी किया जाता है। वस्तुतः, कभी-कभी तो उन्हें एक संगीतज्ञ के रूप में, विभिन्न वाद्ययन्त्र बजाते हुए भी दर्शाया जाता है या फिर परमानन्द में लीन एक नर्तक के रूप में या एक लेखक के रूप में भी उनकी छवि को प्रस्तुत किया जाता है। विद्वज्जन, कविजन और लेखक भगवान श्रीगणेश की कृपा के लिए उनसे प्रार्थना करते हैं ताकि उन्हें अपनी रचनात्मकताओं के प्रयत्नों में सफलता मिले; और भारतीय शास्त्रीय नृत्य का हरेक प्रदर्शन व हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की हरेक प्रस्तुति भगवान श्रीगणेश के आवाहन से ही आरम्भ होती है।

'गणेश अथर्वशीर्ष' के अनुसार, सूक्ष्म शरीर के मूलाधार चक्र में भगवान श्रीगणेश का वास है; यह मेरुदण्ड के मूल में स्थित आधारभूत चक्र है। इस चक्र में स्थित भगवान श्रीगणेश की कृपा से साधक अपनी साधना-यात्रा में आने वाले विघ्नों को समूल नष्ट कर अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए आगे बढ़ पाता है।

भगवान श्रीगणेश के अनेकानेक नामों का आवाहन करना

भारत के शास्त्रों में भगवान श्रीगणेश के अनेकानेक नामों का उल्लेख किया गया है। भगवान श्रीगणेश का प्रत्येक नाम एक 'लक्षण' को प्रकट करता है, अर्थात् उस गुण को प्रकट करता है जिसका वे साकार रूप हैं और जिसका आवाहन हम उनकी आराधना के समय करते हैं। 'विघ्नहर्ता' के रूप में व्यापक रूप से प्रसिद्ध, भगवान श्रीगणेश समस्त आन्तरिक और बाह्य, दोनों प्रकार के विघ्नों को हर लेते हैं। गहराई से मनन करने पर, हो सकता है कि व्यक्ति यह समझ पाए कि जो विघ्न 'बाह्य' प्रतीत होते हैं, उनका मूल कारण वस्तुतः अन्तर में ही है।

भगवान श्रीगणेश के अन्य नाम हैं, "एकाक्षर" अर्थात् वे जो एक अक्षर 'ॐ'स्वरूप हैं; "बुद्धिप्रिय" अर्थात् वे बुद्धिदेवी के प्रिय हैं; "मंगलमूर्ति" अर्थात् वे मांगल्य के मूर्तरूप हैं; "प्रथमेश्वर" अर्थात् समस्त देवों में वे सर्वप्रथम हैं; "सिद्धिविनायक" अर्थात् वे सफलता प्रदान करने वाले हैं; "विद्यावारिधि" अर्थात् वे विद्या के सागर हैं; और "एकदन्त" अर्थात् वे जिनका एक दाँत है क्योंकि यह कथा प्रसिद्ध है कि जब महर्षि वेदव्यास महाकाव्य महाभारत का कथन कर रहे थे तब उसे लिपिबद्ध करने के लिए गणेश जी ने अपना एक दन्त तोड़कर यह लेखन-कार्य किया था।

गणेश जयन्ती और गणेशोत्सव

भारत में और विश्वभर में रहने वाले भारतीय, भगवान श्रीगणेश के सम्मान में विशेषरूप से दो पर्व मनाते हैं :

- गणेश जयन्ती यानी भगवान श्रीगणेश का जन्मोत्सव हिन्दू पंचांग के अनुसार माघ माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है; ग्रैगोरियन कैलेन्डर के अनुसार यह जनवरी और / या फ़रवरी माह के दौरान आती है।
- गणेशोत्सव : यह भगवान श्रीगणेश के सम्मान में दस दिवसीय उत्सव है। पूरे भारत में यह अत्यन्त हर्षोल्लास, उत्साह व भक्तिभाव के साथ मनाया जाता है; विशेषरूप से महाराष्ट्र राज्य में यह वार्षिक महापर्वों में से एक है। हिन्दू पंचांग के अनुसार, भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को [जो सामान्यतः अगस्त और /या सितम्बर माह में आती है] यह उत्सव आरम्भ होता है। कुछ लोगों का यह मानना है कि यह भगवान श्रीगणेश का जन्मोत्सव है; कुछ अन्य लोग यह मानते हैं कि यह वह समय है जब महर्षि वेदव्यास ने भगवान श्रीगणेश के सम्मुख महाभारत का कथन किया था। दस दिन पश्चात्, अनन्त चतुर्दशी को इस उत्सव का समापन होता है।

महाराष्ट्र में, गणेश चतुर्थी के दिन लोग भगवान श्रीगणेश को अपने घरों में आमन्त्रित करते हैं। उनके आगमन की तैयारी में वे पहले अपने घरों की सफ़ाई करते हैं और उनके लिए एक अतिविशेष, सजी हुई पूजा-वेदी तैयार करते हैं; फिर बहुत हर्षोल्लास और धूम-धाम के साथ वे श्रीगणेश की मूर्ति को अपने घर ले आते हैं, मूर्ति की विशेष पूजा कर अपने घर में उसकी स्थापना करते हैं। दस दिनों के इस पूरे उत्सव के दौरान वे भगवान श्रीगणेश का अभिषेक कर, नैवेद्य, सुगन्धित फूल-हार, मिष्टान्न अर्पित कर तथा आरती द्वारा हर दिन उनकी पूजा करते हैं।

उत्सव का दसवाँ दिन, अनन्त चतुर्दशी भगवान को विदा करने का दिन है। ढोल-नगाड़ों के आनन्दमय वादन के साथ, हर परिवार अपने घर में प्रतिष्ठापित मूर्ति को विसर्जित करने के लिए शोभायात्रा में ले आता है। यह विसर्जन समुद्र या नदी या झील में किया जाता है। जब सभी विसर्जन के लिए जा रहे होते हैं तो यह जयघोष करते हैं, "गणपती बाप्पा मोरया, पुढच्या वर्षी लवकर या!" मराठी भाषा के इस वाक्य का अर्थ है, "भगवान श्रीगणेश की जयजयकार! आप अगले वर्ष जल्दी पधारें!"

वर्तमान समय में, लोगों में यह जागरूकता बढ़ने लगी है कि पर्यावरण का संरक्षण करना और इस प्रकार इस पृथ्वी ग्रह का परिरक्षण करना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है; अतः भारत में इस अतिप्रिय उत्सव से सम्बन्धित एक सुन्दर परम्परा जड़ पकड़ने लगी है। गणेशोत्सव के लिए भगवान श्रीगणेश की जो मनोरम मूर्तियाँ बनाई जाती हैं, उनमें अब ऐसी सामग्रियों व रंगों का उपयोग किया जाता है जो प्राकृतिक रूप से गल जाती हों, जो कि पर्यावरण के अनुकूल हो। इतना ही नहीं, मूर्तियों को विसर्जित करने हेतु उन्हें बड़े-बड़े जलाशयों तक ले जाने के स्थान पर लोग अब इस विधि को अपने-अपने घरों में ही सम्पन्न करने लगे हैं—पानी के विशेष पात्रों का निर्माण कर गणेश-मूर्तियों का विसर्जन उस जल में किया जाता है। बाद में यह पानी पेड़-पौधों की सिंचाई करने के लिए उपयोग में लाया जाता है। इस प्रकार, पृथ्वी से जो प्राप्त किया जाता है उसे पुनः पृथ्वी को ही अर्पित किया जाता है।

इस महोत्सव का सच्चा सार है—पूजा का भाव, भगवान श्रीगणेश के प्रति प्रेम-भक्तिभाव जिसकी अनुभूति उनके भक्तजन करते हैं; वे आशीर्वाद जिनके लिए भक्तजन विनम्रतापूर्वक उनसे प्रार्थना करते हैं और प्रयत्न करते हैं कि उनके घर, उनके हृदय और यह सम्पूर्ण विश्व इन आशीर्वादों से ओतप्रोत हो।

वे लोग जो भगवान श्रीगणेश की पूजा-आराधना कर, उनसे संरक्षण की प्रार्थना कर, उनका अनवरत स्मरण कर, अपनी भक्ति द्वारा भगवान श्रीगणेश को प्रसन्न करते हैं, उन्हें भगवान श्रीगणेश सिद्धि [आध्यात्मिक प्राप्ति], बुद्धि [प्रज्ञान] और ऋद्धि [सम्पदा व समृद्धि] का वरदान देते हैं।

एक सुन्दर श्लोक है जो भगवान श्रीगणेश की कृपा का आवाहन करने, उनका महिमागान करने और उनसे संरक्षण की प्रार्थना करने के लिए पूरे भारत में गाया जाता है :

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

हे भगवान श्रीगणेश,
आपकी सूँड़ वक्र है,
आपका स्वरूप महाकाय है,
आपकी प्रभा कोटि सूर्यों के तेज के समान है,
हे प्रभु, कृपया मुझ पर अपने आशीर्वादों की वर्षा करें
जिससे मेरे समस्त कार्य सदैव निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हो सकें।[२]

©२०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

---

[१] श्रीगणेशपञ्चरत्नम्;
भाषान्तर : *Green Message:* https://greenmesg.org/stotras/ganesha/ganesha_pancharatnam.php, जनवरी, २०२१ को इस स्रोत से प्राप्त किया गया। अंग्रेज़ी भाषान्तर ©२०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन।

[२] वक्रतुण्ड महाकाय; अंग्रेज़ी भाषान्तर ©२०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन।